بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

11 October 2019
12 Safar 1441 AH

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

“अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग-5)”

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग 5)**

अल्हम्दुलिल्लाह, मैं अपने शुक्रवार के उपदेश के उसी विषय पर जारी हूँ "ग़ीबत" (चुगली) और इससे जुड़े विषय, विशेष रूप से अल्लाह के लिए मुहब्बत (प्यार), पवित्र पैगंबर (स अ व स) के लिए और दीन-ए-इस्लाम के कार्यों के लिए (इस्लाम का तरीका)। और यह 5 वाँ शुक्रवार [सूरह अल-हुजुरत - ग़ीबत पर 5 वाँ भाग है], और मैं आप सभी को इस विषय में गहराई से समझाने के लिए इसके विस्तार में जा रहा हूँ।

जैसा कि मैंने आपको पिछले शुक्रवार को बताया था, हज़रत मुहम्मद (स अ व स) का अल्लाह के साथ सीधा संबंध था और यह प्यार सीधे अल्लाह (स व त) से आया था। उन्हें इसके लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा (जिहाद को लागू करना)। लेकिन आम लोगों के लिए, यह आवश्यक हो जाता है कि वे संघर्ष करें - प्रयास करें - दिव्य प्रेम को प्राप्त करने के लिए क्योंकि अल्लाह का सीधा प्यार प्राप्त करना आसान काम नहीं है और साथ ही नबी (स अ व स) का प्यार। और इसे स्थापित करना भी सरल नहीं है, इस प्यार के मेल के साथ, लोगों के साथ प्यार का सामान्य संबंध है।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वहाँ कोशिशें होनी चाहिए और इसके लिए आपको [अपने] मुहब्बत (प्रेम) और उसमें मौजूद सभी दोषों पर ध्यान केंद्रित करने और आपको उन कमजोरियों से छुटकारा पाने के लिए आवश्यक प्रयास करने की जरूरत है। ऐसा करने में सक्षम होने के लिए, आपको इसके लिए भावना और रुचि कि आवश्यकता है, और इस भावना और रुचि के बिना, फिर वहाँ अल्लाह के लिए और अल्लाह के रसूल के लिए कोई प्यार नहीं हो सकता। यदि खुद महसूस कम होता है, कमजोर है, तो आप जिसे प्यार करते हैं उसके लिए आपका प्यार भी कम होगा। यह एक प्राकृतिक घटना हैं और कई बार, इस पहलू / विषय की उपेक्षा करके, आप अपनी आंतरिक, आंतरिक समस्याओं के समाधान की तलाश में रुक जाते हैं। आप इसके बावजूद सोचते हैं कि अल्लाह के प्यार को हासिल करने के लिए इतना प्रयास करना, इतनी प्राथना (दुआएँ बनाते हुए) करने के बावजूद, आपको अपनी सलात / नमाज़ (यानी अनिवार्य प्रार्थना) और अच्छे कामों के प्रदर्शन में कोई स्वाद / एहसास और खुशी नहीं मिल रही है । आप यह सोचते हैं कि आप दुआएँ कर रहे हैं, और फिर भी आपकी दुआएँ स्वीकार नहीं की जा रही हैं।

इसका एक साध्य **कारण यह है कि यह खुद का अनुभव** [प्रार्थना के लिए आपका महसूस करना] बर्बाद हो गया हैं, और यही कारण है कि हर समय आपका मन भटकता है और सांसारिक सुख से जुड़ा होता है, जिसको आप सुधारने की सोचते हैं। आप इन सब के प्रति आकर्षित महसूस करते हैं; अल्लाह के लिए जो मुहब्बत आपको होनी चाहिए थी, आपका इन सांसारिक चीजों से प्यार जो आप करते हो, उस मुहब्बत से भी अधिक हो गया है, जो आपको अल्लाह के लिए होना चाहिए था और इस प्रकार इसने अल्लाह के प्यार

को प्राप्त करने या अच्छे कर्मों को करने के लिए, आप में भावना पैदा नहीं की है।

जब भावना सही नहीं हैं, तो प्यार भी सही नहीं होगा। यह केवल कल्पना के दायरे में रह जाएगा। यह केवल एक दावा मात्र रह जाएगा [शब्द जो क्रियाओं में अनुवादित नहीं हैं]। जब अल्लाह के लिए आपका प्यार दिल की गहराई से नहीं आता है, तो आपकी दुआएं भी आपके दिल की गहराई से बाहर नहीं आएंगी, और आपकी सलात कि भी कोई भावना नहीं होगी, और आप कुछ सेकंड या मिनटों में अपनी प्रार्थना को समाप्त करने कि जल्दी करेंगे, जैसे कि वे आपके लिए एक बोझ थे।

इसलिए, अपनी प्रार्थना (नमाज़) कि भावनाओं को प्राप्त करने में सफल होने में सक्षम होना - प्राथना के लिए गहरा प्यार, अल्लाह के साथ उस संबंध को प्राप्त करने के लिए - और आपके स्वीकृतियों (दुआओं) को स्वीकार किया गया, आपको अपने अंदर एक महान आध्यात्मिक सुधार लाने की जरूरत है। आपको सबसे पहले अल्लाह के प्रति गहरा प्रेम होना चाहिए, जो फिर आपकी सभी प्रकार के कठिन परीक्षणों से गुजरने में मदद करेगा, जो उसने आप के लिए उसके प्रति आपके प्यार को परीक्षण के एक साधन के रूप में जाने के लिए बनाया, लेकिन इस सब के बावजूद [यानि, इन सभी परीक्षणों] आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। आपको इसके विपरीत अपने प्यार को बढ़ाना चाहिए, अधिक प्यार रखें और निराशा न हों। आपको उन परीक्षणों को अनुमति नहीं देना चाहिए, जिससे आप गुज़र रहें हैं, जो आपको चीर कर अल्लाह से दूर कर दे, और ये सब आपको अपनी नमाज़, दुआ, ज़िक्र, तिलावते कुरान, और अन्य अच्छे कर्म और अल्लाह के समग्र प्रेम को प्राप्त करने के इबादत के कार्य को छोड़ने के लिए नहीं करना चाहिए। वहाँ बनाने के लिए बहुत सारे प्रयास और बलिदान करने पड़ते हैं, ताकि आप उस दिव्य प्रेम को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें, ताकि **अल्लाह आपके साथ खुश हो और आपसे** प्यार करे। यह केवल तब हो सकता है, जब आप पाएंगे कि आपकी दुआ, नमाज़ और अच्छे कर्म अल्लाह द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।

इसी तरह, जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, "ग़ीबत" (चुगली) एक साधारण विषय नहीं है, इसके विपरीत जो कई लोग सोचते हैं। जब तक अल्लाह के लिए आपकी भावना और रुचि, आपकी प्रार्थनाओं के लिए और जब तक आप उस प्यार के रूप को प्राप्त नहीं करते हैं, जिसके साथ अल्लाह है, अपने सेवकों को देखता है [अर्थात जो प्यार करते हैं और उसके प्रति समर्पित होते हैं], तो फिर जब तक आपके पास यह सब नहीं है, आपको नहीं पता चलेगा कि आपने कितनी घृणित चीज की हैं, तो अपने भाइयों का मांस खाते हैं, जब आप "ग़ीबत" (चुगली) में लिप्त होते हैं और इस प्रकार अल्लाह आपसे दूरी बनाएगा और इस से आपकी निंदा करेगा। और जब आप चुगली में लिप्त होते हैं और यदि आप उसके लिए अरुचि पैदा नहीं करते, यह एक संकेत है कि आपकी भावना पूरी तरह से बर्बाद हो गई है।

अतः यह एक बहुत ही स्पष्ट संकेत है, जो अल्लाह ने हमारे सामने रखा है। इस प्रमाण के साथ हम निश्चित रूप से हमारे दिल की स्थिति का अनुमान करने में सक्षम हैं। तो, जब कभी हम खुद को सुधार नहीं पा रहें हैं, और परिणामों के प्रकाश में जो हमें मिल रही हैं, इस प्रकार, हमें हमारे सामने रखे गए, इन सभी प्रमाणों और परिणामों से सम्बंधित होना चाहिए। इन प्रमाणों में कोई झूठ नहीं है [अर्थात चुगली की पोशाक को दूर फेंक देना और अपने स्वयं के सुधार के लिए - अल्लाह के प्यार को प्राप्त करना]।

इस प्रकार से, आपको पहले उस अनुभव और रूचि में विकास करना चाहिए [और रखरखाव या वृद्धि] और तब आप अल्लाह के लिए और पवित्र पैगंबर (स अ व स) के लिए तथा अल्लाह के चुनाव के लिए प्यार प्राप्त करेंगें, जो अल्लाह द्वारा आप सभी को सीधे पथ पर मार्गदर्शन करने के लिए आते है। तो, अपने अनुभव को समस्तरीय बनायें [अल्लाह के लिए और सभी अच्छी चीजों के साथ जो अल्लाह की दीन से जुड़ा हुआ है] इसके लिए बाद में यह है कि आपको अच्छे कामों के लिए प्यार होगा और आप पापों के लिए अरुचि और नफ़रत का विकास करोगे।

यदि आप अपने * यानि इस अनुभव को समस्तरीय नहीं करेंगें, तो आप इस परियोजना के साथ आगे नहीं जा पाएंगे [अल्लाह के प्रति प्रेम रखने के लिए और अल्लाह को प्राप्त करने के लिए]। "ग़ीबत" (चुगली) के सिलसिले में, अगला चरण जो मुझे आपसे उम्मीद है, यह की आप अपने हृदय का **परीक्षण करें**, **और देखें कि आप** कितना आनंद "ग़ीबत" (चुगली) द्वारा प्राप्त करते है। यदि आप इसे एक साथ समाप्त नहीं कर सकते, तो आपको इसे देखने कि ज़रूरत हैं कि चुगली का अनुभव कम हो जाना चाहिए। आपको अनुमान लगाना चाहिए कि क्या यह घट रहा है या नहीं! यदि आप चुगली के लिए उस भावना और रुचि को कम करने में सफल होते हैं, तो, अल्हम्दुलिल्लाह आप बच जाओगे; आप अच्छे [आध्यात्मिक] स्वास्थ्य में होंगे।

लेकिन, अगर इन ठोस सलाह को सुनने के बाद में, और चुगली में तृप्त होने से रुकने का निर्णय लेने के बावजूद, फिर भी आप इसे करना जारी रखते हैं और आप इसे करने में आनंद लेते हैं, तो इसका मतलब है कि आप किसी भी तरह के सुधार से नहीं गुज़र रहे हैं। इस का मतलब है कि आपने ["ग़ीबत" और सभी बुराइयों] के साथ बलपूर्वक कटौती करने का प्रयास किया हैं और इस प्रकार जब आप बुराई की ओर झुकाव रखते हैं, फिर अपने आप को अच्छे कर्म करने में मजबूर करने के बावजूद, लेकिन फिर एक क्षण पर ये रुझान [बुराइयों कि] फिर से खुल जाती है और आप फिर से बुराइयों में लिप्त होना [अर्थात चुगली करना] शुरू हो जाते हैं।

इस प्रकार अपने जीवन से पूरी तरह से चुगली को निकालने के साधनों को महत्व दें और अपने आप को गहराई से परखें जैसे मैंने आपको दिखाया है। और यह निश्चित आपके पास होना ही चाहिए, कि अगर **एक जमात के रूप में** हम "ग़ीबत" (चुगली) से पूरी तरह से मुक्त हैं, तो हमारा समुदाय (जमात) भी बच जाएगा। हमारे सभी सामाजिक संबंध भी बच जाएंगे। सभी कमजोरियों / दोषों में से जो हमारे अंदर हैं, अगर हम एक ही बार में सभी बुराइयों से खुद को पूरी तरह से छुटकारा नहीं दे सकते, परन्तु हमें उन्हें अत्यंत कम करने का प्रयास करना चाहिए, और इसलिए, सभी तिरस्कार योग्य परिणाम, जो हम हर रोज़ शादी के दायरे में देखते हैं, फिर यह प्रयास, इस क्षेत्र में भी असाधारण सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

आप घरों में इस स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं - मैं व्यक्तिगत रूप से सभी घरों में नहीं जा सकता, लेकिन मैंने जो कुछ मालूम किया और देखा है, विशेष रूप से मेरे दावा के दौरान, और अल्लाह द्वारा मुझे भी दिखाया गया हैं, मुझे पता चला है, कि लोग किस प्रकार से उनके घरों में बात करते [और व्यवहार करते] हैं। कुछ मामलों में उधर बेटियां और उनकी माँ जो अपनी भाभी हैं (अपने भाई की पत्नी) कि चुगली **करने के लिए एक साथ बैठती हैं।** और उन सभी के ऊपर, भाई के पास सम्मान की कोई भावना

नहीं है और अपनी पत्नी के प्रति अपने पति के कर्तव्यों को कैसे पूरा करना हैं उस तरीके को नहीं जानते हैं; वह अपनी पत्नी के खिलाफ बात करने में अपनी माँ और बहनों के साथ सक्रिय रूप से भाग लेते है। माँ और बेटियाँ मिलकर बहू / भावज को अपमानित करने में एक साथ कार्य करती हैं, उसे बेवकूफ बोलते है और अशांति उत्पन्न करने कि तलाश करते हैं, **पति और पत्नी के बीच में** गलतफहमी और समस्याएं पैदा करना चाहते हैं।

यह सब शुद्ध क्रूरता, अव्यवस्था और अन्याय है और यह एक चुगली भी है और वहाँ अन्याय के दूसरे खतरनाक रूप भी इसके साथ जुड़े हैं। अगर निर्बल बहू एक भूल-चूक कर देती हैं, और अगर आपको उसके प्रति सच्ची सहानुभूति है -ऐसी सहानुभूति जो आप हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के साथ अपने संबंध के कारण विकसित करते हैं - तो फिर, आपको उसके लिए दर्पण की तरह बनना चाहिए। आपको उसे बड़ी मात्रा में प्**यार के साथ समझना चाहिए**, **और आप** उसके दर्द को समान रूप से महसूस करेंगें, जो वह महसूस करती है, आप उसकी कठिनाइयों को महसूस करेंगे और नफरत की आग जलाने, चुगली करने, और लड़ाई मचाने कि बजाय - जहाँ घर एक युध्क्**षेत्र**, **नरक बन जाएगा**, **जहाँ कहीं** वृथा- भाषण, विवाद, शारीरिक हमले आदि होते हैं - आपको उस घर को शांति के स्वर्ग में बदलने का प्रयास करना चाहिए, ऐसी जगह जहाँ एक-दूसरे के अधिकारों का सम्मान हो और वो घर एक ऐसी जगह होगी, जहाँ रहना अच्छा लगता है, शांति और तसल्ली से, हर कोई एक दूसरे के साथ अच्छे सम्बन्ध में है, और जहाँ कोई लड़ाई या विवाद नहीं है। आपके नेक कार्य के माध्यम से, आपने पति और पत्नी को शांति और तसल्ली के साथ रहने के लिए प्रोत्साहित किया होगा, और शांति और अल्लाह का आशीर्वाद उस जोड़े को घेर लेता था [और घर]।

कभी-कभी आप ऐसी बहुओं को देखते हैं, जो अपनी सास और ननद के खिलाफ होती हैं। वे अपनी सास और ननद के खिलाफ अपने पति को हर तरह की बुरी बातें कहती हैं। वे जानती हैं, कि पति वहाँ नहीं हैं

[कुछ भी गवाही के लिए] क्योंकि उन्हें काम पर जाना है, और इस प्रकार रात में, वे उनकी माँ और बहनों के बारे में उनसे बातचीत करके सभी बयान करती हैं। और वे चाहती हैं कि उनके पति अपने परिवार से अलग रहें और अलग निवास की तलाश करे। यह इस प्रकार की शेष पत्नी है, जब वह देखती है कि उसके पति ने उसकी माँ और बहनों के साथ सभी संबंध तोड़ लिए हैं ... जिस वक्त तक वह अपने रिश्ते को पत्नी के **परिवार के साथ बरकरार रखता है** - पत्नी की माँ और परिवार! इस प्रकार, किसी के लिए गलतफहमी और अराजकता पैदा करने की कोशिश की जा रही है, और अमन इसके साथ नहीं जा सकता।

इसलिए, यदि आप देखते हैं, कि पारिवारिक या वैवाहिक जीवन में क्या हो रहा है, अगर यात्रा की शुरुआत ही स्वयं नफ़रत और दूसरे घृणा करने योग्य और अपमानजनक चीजों पर आधारित है, [यदि आप कसूरवार हैं] तो आपने एक बड़ा पाप किया है ,जो अल्लाह कि दृष्टि के सामने घृणा करने योग्य है। यदि आप वास्तव में, जब आप इसका मतलब कहते हैं कि आप हज़रत मुहम्मद (स अ व स) से प्यार करते है, तो यह निश्चयपूर्वक कथन / उद्घोषणा आपके कानों में गूंजना चाहिए कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए एक आईने कि तरह है। अतीत काल में भी मैंने आपसे कहा था कि एक दर्पण कोई आवाज नहीं

करता। यदि कोई व्यक्ति गलत तरीके से कपड़े पहने है, उसके बाल अच्छी तरह से कंघी नहीं कि हैं आदि, जब भी वह खुद को आईने में देखता है, तो दर्पण उसे चुपचाप उसकि कमियों को दिखाता हैं। तो, इस उदाहरण में बहुत सारी बुद्धिमत्ता हैं [और हदीस]। एक मुसलमान को खुद को सुधारना चाहिए और एक दर्पण की तरह चुपचाप एक व्यक्ति में सुधार लाना चाहिए, और उस व्यक्ति को अपनी गलती का एहसास करने के लिए और अपने आप को उचित रूप से ठीक करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

समय की कमी के कारण मुझे आज के लिए यहाँ रुकने की जरूरत है। यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है

और इसके सभी पहलुओं में व्यापक विषय हैं। इस विषय के कई पहलू हैं और इस प्रकार इसे जारी रखने की आवश्यकता है [बाद में]। आशा हैं, अल्लाह (स व त) मुझे तौफीक दे, कि मैं दुनिया भर में सभी मुसलमानों और सामान्य रूप से सभी मानवता कि तरबियत (शिक्षा) के लिए उसी विषय पर [अगले सप्ताह] व्याख्या करना जारी रखूं । मैं प्रार्थना करता हूँ, कि इस विषय पर इन उपदेशों के माध्यम से, समाज के कई पारिवारिक और वैवाहिक समस्याओं इत्यादि का समाधान हो, और यह कि विश्व में और प्रत्येक घर में शांति स्थापित हो।

इंशा-अल्लाह, अमीन।